श्रीकुञ्जबिहारी-अष्टक

यः स्तूयते श्रुतिगणैर्निपुणैरजस्रं, सम्पूज्यते क्रतुगतैः प्रणतैः क्रियाभिः।
तं सर्वकर्मफलदं निजसेवकानां, श्रीमद्विहारिचरणं शरणं प्रपद्ये॥ १॥
यं मानसे सुमतयो यतयो निधाय, सद्यो जहुः सहृदयाहृदयान्धकारम्।
तं चन्द्रमण्डल-नखावलि-दीप्यमानं, श्रीमद्विहारिचरणं शरणं प्रपद्ये॥ २॥
येन क्षणेन समकारिविपद्वियोगो, ध्यानास्पदं सुगमितेन नुतेन विज्ञैः।
तं तापवारण-निवारण-साङ्कुशाङ्कं, श्रीमद्विहारिचरणं शरणं प्रपद्ये॥ ३॥
यस्मै विधाय विधिना विधिनारदाद्याः, पूजां विवेकवरदां वरदास्यभावाः।
तं दाक्षलक्षण-विलक्षण-लक्षणाढ्यं, श्रीमद्विहारिचरणं शरणं प्रपद्ये॥ ४॥
यस्मात् सुखैकसदनान्मदनारिमुख्याः, सिद्धिं समीयुरतुलां-सकलाङ्गशोभाम्।
तं शुद्धबुद्धि-शुभवृद्धि-समृद्धि-हेतुं, श्रीमद्विहारिचरणं शरणं प्रपद्ये॥ ५॥
यस्य प्रपन्नवरदस्य प्रसादतः स्यात्, तापत्रयापहरणं शरणं गतानाम्।
तं नीलनीरजनिभं जनिभञ्जनाय, श्रीमद्विहारिचरणं शरणं प्रपद्ये॥ ६॥
यस्मिन् मनोविनिहितं भवति प्रसन्नं, खिन्नं कदिन्द्रियगणैरपि यद्विषण्णम्।
तं वास्तव-स्तव-निरस्त-समस्त दुःखं, श्रीमद्विहारिचरणं शरणं प्रपद्ये॥ ७॥
हे कृष्णपाद ! शमिताति विषादभक्त, वाञ्छाप्रदामरमहीरुहपञ्चशाखः।
संसार-सागर-समुत्तरणे वहित्र, हे चिह्न-चित्रितचरित्र नमो नमस्ते॥ ८॥

इदं विष्णोः पादाष्टकमतिविषादाभिशमनम्,
प्रणीतं यत्प्रेम्णा सुकवि-जगदीशेन विदुषा।
पठेद्यो वा भक्तयाऽच्युति-चरण-चेताः स मनुजो,
भवे भुक्त्वा भोगानभिसरति चान्ते हरिपदम्॥

卐

आचार्य
श्री बच्चू गोस्वामी

श्री मोहितकृष्ण गोस्वामी

ठा. श्रीबाँकेबिहारीजी महाराज की
सेवाओं के लिए सम्पर्क करें -
श्रीअंगसेवी :
ठा. बाँकेबिहारीजी महाराज
एवं श्रीनिधिवनराज मन्दिर

गद्दी : श्रीबाँकेबिहारी मन्दिर गेट नं. 3 के सामने, पोस्ट ऑफिस के बराबर, श्रीधाम वृन्दावन
9917028832, 8958422967

॥ श्रीमत्कुँजविहारिणे नमः॥

॥ श्रीकुँजबिहारी श्रीहरिदास ॥

ठा. श्रीबाँकेबिहारीजी महाराज की महामंगल आरती, विनय पचासा एवं कुंजबिहारी अष्टक

श्रीस्वामी हरिदासजी महाराज

श्रीनिधिवनराज में रंग महल
प्रिया प्रियतम के लड्डू-पान-दातुन
महाप्रसाद के मंगल दर्शन

श्री मोहितकृष्ण गोस्वामी
श्री बाँके बिहारी मंदिर श्रीधाम वृन्दावन
@Bankey_bihari_temple

श्री बिहारी जी की आरती

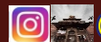

सब द्वारन को छोड़ के आई तेरे द्वार ॥
हे वृषभानु की लाड़ली मेरी ओर निहार॥
सुनी न देखी ऐसी जोरी जुगल किशोर किशोरी ॥
अंग-अंग शोभा हर सजती, वारौं काम करोरी॥
मोर - मुकुट कटि-काछनी कर मुरली उर माल ॥
ये वानिक मो मन बसो, सदा बिहारी लाल॥
पाग बनीं पटका बन्यो, बन्यो लाल कौ भेष ॥
जै जै श्रीकुञ्जबिहारीलाल की, दौड़ आरती देख॥
आरती कीजै नव नागर की ॥
खंजन नैन बैन रसमाते रूप सुधा - सागर की॥
पान खात मुसिक्यात मनोहर, सुख उपमा आगर की ॥
श्री रसिक सखी दम्पति आरती सों नैन सैन उजागर की॥
ऐसे ही देखत रहौ जन्म सफल करि मानौ ॥
प्यारे की भामती भामतीजु के प्राणप्यारे जुगलकिशोरहिं जानों॥
छिन न टरों पल होऊ न इत-उत रहौ एक ही तानों ॥
श्री हरिदास के स्वामी श्यामा कुञ्जबिहारी मन रानों॥

॥ श्रीमत्कुंजविहारिणे नमः॥ ॥ कुंजविहारी श्रीहरिदास॥

श्रीबाँकेबिहारी-विनय-पचासा

दोहा- बाँकी चितवन कटि लचक, बाँके चरन रसाल।
स्वामी श्री हरिदास के, बाँकेबिहारी लाल॥

जै - जै - जै श्रीबाँकेविहारी । हम आये हैं शरन तिहारी ॥ १॥
स्वामी श्रीहरिदास के प्यारे । भक्तजन के नित रखवारे ॥ २॥
श्याम स्वरूप मधुर मुसिकाते । बड़े-बड़े नैंन नेह बरसाते ॥ ३॥
पटका पाग पीताम्बर शोभा । सिर सिरपेच देख मन लोभा ॥ ४॥
तिरछी पाग मोति लर बाँकी । सीस टिपारे सुन्दर झाँकी ॥ ५॥
मोर पाँख की लटक निराली । कानन कुण्डल लट घुँघराली ॥ ६॥
नथ बुलाक पै तन मन वारी । मंद हसन लागै अति प्यारी ॥ ७॥
तिरछी ग्रीव कण्ठ मनि माला । उर पै गुंजा हार रसाला ॥ ८॥
काँधे साजे सुन्दर पटका । गोटा किरन मोतिन के लटका ॥ ९॥
भुज में पहिर अँगरखा झीनौ । कटि काछनी अंग ढक लीनौ ॥ १०॥
कमर-बंध की लटकन न्यारी । चरन छुपाये श्रीबाँकेबिहारी ॥ ११॥
इकलाई पीछे ते आई । दूनी शोभा दई बढ़ाई ॥ १२॥
गादी सेवा पास विराजै । श्री हरिदास छबी अति राजै ॥ १३॥
घंटी बाजे बजत न आगै । झाँकी परदा पुनि-पुनि लागै ॥ १४॥
सोने - चाँदी के सिंहासन । छत्र लगी मोती की लटकन ॥ १५॥
बाँके तिरछे सुघर पुजारी । तिनकी हू छबि लागे प्यारी ॥ १६॥
अतर फुलेल लगाय सिहावैं । गुलाब जल केशर बरसावैं ॥ १७॥
दूध-भात नित भोग लगावैं । छप्पन-भोग भोग में आवैं ॥ १८॥
मगसिर सुदी पंचमी आई । सो विहार पंचमी कहाई ॥ १९॥
आई विहार पंचमी जबते । आनन्द उत्सव होवैं तबते ॥ २०॥
बसन्त पाँचे साज बसन्ती । लगै गुलाल पोशाक बसन्ती ॥ २१॥
होली उत्सव रंग बरसावै । उड़त गुलाल कुमकुमा लावै ॥ २२॥
फूल डोल बैठें पिय प्यारी । कुंज विहारिन कुंज विहारी ॥ २३॥
जुगल सरूप एक मूरत में । लखौ बिहारी जी सूरत में ॥ २४॥
श्याम सरूप है बाँकेबिहारी । अंग चमक श्री राधा प्यारी ॥ २५॥

श्री बाँके बिहारी मंदिर श्रीधाम वृन्दावन
Shri Bankey Bihari Mandir
Shri Dham Vrindavan
@Bankey_bihari_temple
@Mohit_krishna_Goswami

RP-9410810927

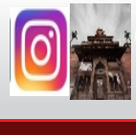

डोल-एकादशी डोल सजावैं । फूले फूल छबी चमकावैं ॥ २६॥
अखैतीज पै चरन दिखावैं । दूर-दूर के प्रेमी आवैं ॥ २७॥
गर्मिन भर फूलन के बँगला । पटका हार फूलन के झँगला ॥ २८॥
शीतल भोग, फुहारे चलते । गोटा के पंखा नित झलते ॥ २९॥
हरियाली तीजन कौ झूला । बड़ी भीड़ प्रेमी मन फूला ॥ ३०॥
जन्माष्टमी मंगला आरति । सखी मुदित निज तन-मन वारती ॥ ३१॥
नन्द महोत्सव भीड़ अटूट । सवा प्रहर कंचन की लूट ॥ ३२॥
ललिता छठ उत्सव सुखकारी । राधा अष्टमी की चाव सवारी ॥ ३३॥
शरद चाँदनी मुकट धरावैं । मुरलीधर के दर्शन पावैं ॥ ३४॥
दीप दिवारी हटरी दर्शन । निरखत सुख पावै प्रेमी मन ॥ ३५॥
मन्दिर होते उत्सव नित-नित । जीवन सफल करें प्रेमी चित ॥ ३६॥
जो कोई तुम्हें प्रेम ते ध्यावें । सोई सुख मनवांछित फल पावें॥ ३७॥
तुम हो दीनबन्धु ब्रज-नायक । मैं हूँ दीन सुनो सुखदायक ॥ ३८॥
मैं आयौ तेरे द्वार भिखारी । कृपा करो श्रीबाँकेबिहारी ॥ ३९॥
दीन दुःखी के संकट हरते । भक्तन पै अनुकम्पा करते ॥ ४०॥
मैं हूँ सेवक नाथ तुम्हारो । बालक के अपराध बिसारो ॥ ४१॥
मोकूँ जग संकट ने घेरौ । तुम बिन कौन हरै दुख मेरौ ॥ ४२॥
विपदा ते प्रभु आप बचाऔ । कृपा करो मोकूँ अपनाऔ ॥ ४३॥
मैं अज्ञान मंद-मति भारी । दया करो श्रीबाँकेविहारी ॥ ४४॥
बाँकेविहारी विनय पचासा । नित्य पढ़ै पावै निज आसा ॥ ४५॥
पढ़ै भाव ते नितप्रति गावैं । दुख दारिद्र निकट नहीं आवैं ॥ ४६॥
धन परिवार बढ़ै व्यापारा । सहज होय भव सागर पारा ॥ ४७॥
कलियुग के ठाकुर रंग राते । दूर-दूर के प्रेमी आते ॥ ४८॥
दर्शन कर निज हृदय सिहाते । अष्ट-सिद्धि नवनिधि सुख पाते॥ ४९॥
मेरे सब दुख हरो दयाला । दूर करो माया जंजाला ॥ ५०॥
दया करो मोंकूँ अपनाऔ । कृपा-विन्दु मन में बरसाऔ ॥ ५१॥

दोहा- ऐसौ मन कर देउ मैं, निरखूँ श्यामा-श्याम।
प्रेम विन्दु दृग ते झरें, वृन्दावन विश्राम॥

॥ श्रीबाँकेबिहारी लाल की जय॥

श्रीबाँकेबिहारी जी महाराज श्रीधामवृन्दावन सेवा समिति ट्रस्ट (रजि.)

ठा. श्रीबाँकेबिहारीजी महाराज की समस्त सेवा पूजा -
मंगल मनोकामना कलश पूजन, देहरी पूजन, पोशाक एवं श्रृंगार सेवा,
बाल भोग, तुलसी-चन्दन-इत्र सेवा, राजभोग, शयनभोग, छप्पनभोग
विशेष उत्सव सेवा, फूल बंगला, फूल बैठक, ब्राह्मण सेवा आदि

9917028832, 8958422967

भक्त अपने नाम एवं गोत्र से सेवा भेजकर
घर पर ही कृपा प्रसादी एवं आशीर्वाद प्राप्त करें।

For Seva Puja